P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रंग रस एवं अभिव्यक्ति

नमिता त्यागी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
ड्रॉइंग एवं पेंटिंग विभाग,
फैकल्टी ऑफ आर्टस,
दयाल बाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा

सारांश

एक कलाकृति में मानव अपने अनुभवों को निश्चित चित्र तत्वों एवं सौन्दर्य सिद्धान्तों के आधार पर ही अभिव्यक्ति करता है। इस रूप सजृन की प्रक्रिया को कला की संज्ञा प्रदान की जाती है।कलाएँ मनुष्य की

अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। हमारी कलात्मक अभिव्यक्ति ही हमें दर्शक से जोड़ती है। हमारा कलात्मक प्रयोजन तभी सफल होता है जब दर्शक उस चित्र की रसानुभूति कर सकें। रचनात्मक कल्पना और अनुभूति दोनों को अनुपातिक तौर पर कलात्मक वस्तुओं के सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व के रूप में समझा गया है।एक उत्तम चित्र अथवा अभिनय मनुष्य को सन्तोषजनक आनन्द से भर देते हैं क्योंकि वह सम भावों की अभिव्यक्ति करते हैं।

भारतीय कला व साहित्य रस प्रधान रहा है तथा रसों ने उन्हें जीवन्त रूप प्रदान किया। चेतनात्मक अनुभूत शक्ति, जो मानव के हृदय अन्तराल में सदैव विद्यमान रहती है, जब कलात्मक सृजन में उद्भूत हो जाती है तो रस की स्थिति अवतरित होती है। भरत मुनि ने इन रसों का परिचय अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत करके सभी कलाओं के लिये उपयोगी बताया।

जहाँ कला है, वहाँ भावों की अभिव्यक्ति है, जहाँ भाव है, वहाँ रसों का होना स्वाभाविक है और चित्रकला में रसों की निष्पत्ति के लिये चित्रकला के प्रमुख तत्वों में समाहित रंगों का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि रंगों का चित्रकृति की स्वाभाविक प्रवृत्तियों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। रंग भावो को उभार कर चित्र में इस स्थिति को जन्म देते हैं।कला रसानुभूति एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जन्म से ही मनुष्य में विद्यमान रहती है।यह अनुभूतियाँ हमारी मनः स्थिति के साथ संयोजित होती है और व्यक्त होती हैं। यदि हमारी मनः स्थिति दुखद है, तो हम चित्र के साथ भी अपनी वेदना को जोड़कर द्रवीभूत होते है। व्यक्ति की संवेदनशीलता जिनती अधिक होगी उतनी ही गहन रसानुभूति होती है।

भारतीय चित्रकला के परिदृश्य में रंगों की भाषा प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक निनरन्तर रचनात्मक कौशल के साथ प्रस्तुत होती रही है।अजन्ता की महान कलाकृतियाँ हो अथवा लघु चित्रण परम्परा, रंगों का प्रतीक रूप में रचनात्मक प्रयोग सम्पर्ण विश्व को आज भी अपने आकर्षण में बाँधे है।मुगल कला का सूफीयानापन व उसका राजसीवैभव भी आकर्षक एवं कलात्मक रंग संयोजनों की रचनात्मक क्षमता का परिचायक आधुनिक कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों में रंगों के कलात्मक प्रयोग में नवीन आयाम स्थापित किये। यामिनी राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अमृता शेरगिल, गगेन्द्रनाथ ठाकुर इन सभी कलाकारों की कृतियों में रंगों के आलोक की अद्भुत शक्ति एवं निर्भीकता के दर्शन होते है।

भाव व रस चित्रकला में सदैव सम्बन्धित रहे हैं। अतः उनका महत्व प्राचीन काल से आज तक विद्यमान है।

मुख्य शब्द : रसानुभूति, अभिव्यक्ति, चेतनात्मक,भाव, रस।

प्रस्तावना

मानव जीवन का उद्देश्य क्रियाशीलता अथवा निर्माण में निहित है। इससे रहित जीवन शून्य से अधिक नहीं होता। एक कलाकृति में मानव अपने अनुभवों को निश्चित चित्र तत्वों एवं सौन्दर्य सिद्धान्तों के आधार पर ही अभिव्यक्ति करता है। इस रूप सजृन की प्रक्रिया को कला की संज्ञा प्रदान की जाती है। हृदय अनुभूति के परिणाम स्वरूप ही कला की भाषा भावों से परिपूर्ण है।

भाव का अर्थ होता है, भावना, उद्वेग, आवेग, संवेग, उन्मेष, इच्छा, प्रकृति और व्यंग इत्यादि का अुनभव। यह अनुभव हमारी इन्द्रियों के द्वारा हमारे आन्तरिक मन मस्तिष्क में उतर कर हमारी आत्मा को प्रभावित करता है। यह भाव सुख एवं दुख के रूप में हमारे अन्तर्मन में प्रवाहित होता है एवं विभिन्न

रूपों में परिस्थितियों वश प्रकट होते है। इन्ही भावों को भारतीय प्राचीन शास्त्रों में रस की कोटि में विभाजित किया गया है। यह रस कलाकार की कृतियों में विभिन्न रूपों में एवं रंगों की मनोहारी उपस्थिति से प्रकट होते है जो दर्शक को आनन्द विभोर करते है।

कलाएँ मनुष्य की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। हमारी कलात्मक अभिव्यक्ति ही हमें दर्शक से जोड़ती है। हमारा कलात्मक प्रयोजन तभी सफल होता है जब दर्शक उस चित्र की रसानुभूति कर सकें। रचनात्मक कल्पना और अनुभूति दोनों को अनुपातिक तौर पर कलात्मक वस्तुओं के सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व के रूप में समझा गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय चित्रकला परिदृश्य में कलात्मक एवं रचनात्मक सृजन हेतु आवश्यक तत्व रंग एवं रसों के समन्वय से उत्पन्न भावाभिव्यक्ति की कलात्मक अभिव्यंजना प्रस्तुत करते हुए भारतीय प्राचीन तथा आधुनिक कला में इसके महत्व और रचनाशीलता पर प्रकाश डाला है, जो भावी शोधार्थियों के रचनात्मक कौशल वृद्धि में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

साहित्यावलोकन

भारतीय चित्रकला में भावों की अभिव्यक्ति कल्पना के उच्चतम् शिखर को पार करती हुई आन्तरिक चेतना को स्पर्श करती है। यही विशेषता भारतीय चित्रकला में प्राण तत्व है जो कल्पानागत जगत में रसों की अभिव्यक्ति को सरल व ग्राहय बना देती है।

वाचस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला, पुस्तक भारतीय चित्रकला की इन परम्परागत विशेषताओं की सविस्तार चर्चा करती है, कि किस प्रकार प्राचीन शास्त्रीय कला की रचनाशीलता का आधार स्तम्भ रसभाव–पूरित कलाकृतियाँ है, जो भी भावी कलाकारों को प्रेरित करती हैं। राजेन्द्र बाजपेयी, सौन्दर्य, पुस्तक कला में निहित रस तत्व का बोध कराती है, रसों की सम्पूर्ण व्याख्या उनका प्रभाव, उत्पति तथा रंगों की प्राथमिकता का ज्ञान कराती है जो कला की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम है। वासुदेव केतकर गोदावरी, भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र, समरांगण सूत्रधार एवं चित्रसूत्रम आदि ग्रन्थों के माध्यम से सम्बन्धित श्लोकों एवं उनके अर्थों को समझने का प्रयास किया। इस शोध पत्र में रंगों उनसे सम्बन्धित रसों एवं भावों की अभिव्यक्ति का समन्वय तथा उनका सृजनात्मकता में महत्व इस शोध पत्र को मौलिकता प्रदान करता है।

हिन्दू दर्शन के अनुसार ब्रह्म, जिससे हमारी आत्मा को ब्रह्मानन्द रस जो भावनाओं के माध्यम से प्राप्त होता है तथा जो मनुष्य को एक अद्भुत आनन्द प्रदान करता है।[1] इसी प्रकारएक उत्तम चित्र अथवा अभिनय मनुष्य को सन्तोषजनक आनन्द से भर देते हैं क्योंकि वह सम भावों की अभिव्यक्ति करते हैं।[2]

रस की अनुभूति आनन्ददायक होती है, किन्तु हर स्थिति में नहीं। रसका आधार है–भाव। भरतमुनि ने आठ स्थायी भावों के साथ आठ रसों को बताया है–

श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानकः ।
वीभत्सादृभूतसंज्ञोचेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृतः ।।[3]

मार्कण्डेय मुनि ने विष्णु धर्मोत्तर पुराण में नौ स्थायी भावों पर आधारित नौ प्रकार के 'रस चित्रों' का उल्लेख किया है–

श्रृंगार, हास्य, करुण, वीर, रौद्र, भयानकः ।
वीभतसाद्भुत शानतश्य नव चित्ररसाः स्मृतः ।।[4]

भरत ने स्थायी भाव को ही रस माना है–
विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्र सनिस्पति।[5]

अर्थात विभाव, अुनभाव और व्यभिचारी भाव के मिश्रित अभिनयों से उत्पन्न स्थायी भाव रस है।

इस प्रकार हम देखते है कि रस, कला एवं मानव में अत्यन्त घनिष्ठ समन्वय है। भारतीय कला व साहित्य रस प्रधान रहा है तथा रसों ने उन्हें जीवन्त रूप प्रदान किया। चेतनात्मक अनुभूत शक्ति, जो मानव के हृदय अन्तराल में सदैव विद्यमान रहती है, जब कलात्मक सृजन में उद्भूत हो जाती है तो रस की स्थिति अवतरित होती है।

भरतमुनि ने अपने नाट्य शास्त्र में प्रत्येक रस का सम्बन्ध एक विशेष रंग से स्थापित किया है। यह रंग रसों के प्रतीक रूप में प्रतिष्ठि है–

रस	**रंग**
श्रृंगार	हल्का हरा
वीर	रक्त
हास्य	श्वेत
भयानक	काला
करुण	कपोत (ग्रे)
वीभत्स	नीला
रौद्र	गौर(लाल)
विस्मय	पीला

श्रृंगार रस

इसका स्थायी भाव रति एवं रंग हल्का हरा माना गया है। इसे रस राज की संज्ञा दी गयी है। यह संयोग और वियोग दोनों को प्रतिपादित करता है। रति भाव की प्रधानता के कारण लालित्यपूर्ण मुद्राएँ एंव लावण्य इसका प्रमुख अंग है। चित्रों में हरे, लाल एवं पीले रंगों का प्रयोग प्रमुखता से करके इस रस को अधिक तीव्रता से प्रदर्शित किया जाता है।[7]

हास्य रस

हास्य रस एक सुखद अनुभूति का परिचायक रस है। इसका स्थायी भाव हास है। हास्य रस के चित्रण में विनोदयुक्त रूप विन्यास, रेखांकन भौड़ा एवं असन्तुलित होता है। सफेद रंग अथवा भद्दे रंगों का प्रयोग उद्दीपक के रूप में उद्रेक संचालित करता है।[8]

करुण रस

इस रस का स्थायी भाव शोक है। करुण रस के चित्रण में आकृतियों में स्थिरता, मुखमुद्रा पर शान्तिभाव, दयाभाव, याचना के भावों को प्रदर्शित किया जाना चाहिये। सफेद रंग अथवा ग्रे रंग का प्रयोग इसके लिये उपयुक्त बताया गया है। भूरा, काला एवं गहरा नीला रंग भी इस रस को उद्वेलित करता है।[9]

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वीर रस

इस रस का स्थायी भाव शोक है। चित्रण में कठोर, सशक्त गतिमय रूप एवं रेखाओं के साथ गहरे रंगो के साथ रक्त वर्ण की अधिकता इसे अधिक तीव्र बनाती है जिनमें हरा, नीला, नारंगी, लाल आदि प्रमुख है।

रौद्र रस

इसका स्थायी भाव क्रोध है तथा इसे भी रक्त वर्ण द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। चित्रण में रेखाएँ सशक्त व गहरे रंग जिनमें बैंगनी, लाल, भूरा, काला रंग प्रमुख है।

भयानक रस

इस रस का स्थायी भाव भय है। इस रस के चित्रण में विकृति एवं क्रोधयुक्त आकृतियाँ, रेखाएँ, कठोर असन्तुलित व उलझन व्यक्त करती है। चित्रण में अधिकांश गहरे एवं काले रंगों का प्रयोग प्रमुख माना जाता है।

वीभत्स रस

इस रस का स्थायी भाव जुगुप्सा है। इस रस को प्रकट करने हेतू कलाकार असुन्दर, अप्रिय रूपों का निरूपण करता है तथा इस रस को प्रस्तुत करने के लिये गहरा नीला रंग प्रयुक्त माना गया है तथा भूरे एवं काले रंगों का प्रयोग भी किया जाता है।

अद्भुत रस

आकृति के रूप विन्यास में विस्मय भाव को अद्भुत रस की अवस्था कहा जाता है। इसका स्थायी भाव विस्मय व इसे पीले रंग से प्रदर्शित किया जाता है।

इन आठ रसों के अतिरिक्त अभिनव गुप्त द्वारा शान्त रस का भी उल्लेख किया गया तथा निर्वेद को इसका स्थायी भाव माना कि जब ऐसी स्थिति आये कि कोई पात्र निर्वेद मुद्रा में जड़ की भाँति स्थिर हो जाये।

भरत मुनि ने इन रसों का परिचय अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत करके सभी कलाओं के लिये उपयोगी बताया।

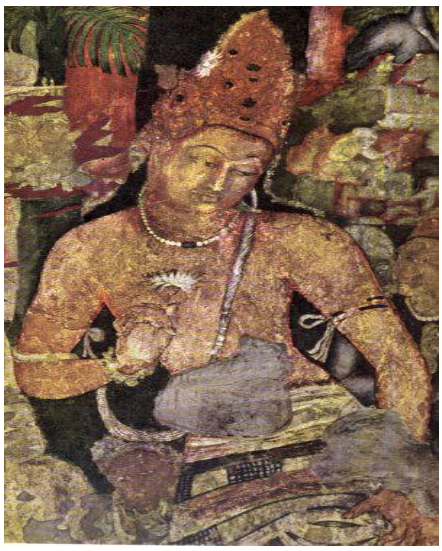

अवलोकितेश्वरा ,अजन्ता

पुष्प विक्रेता, बेन्द्रे

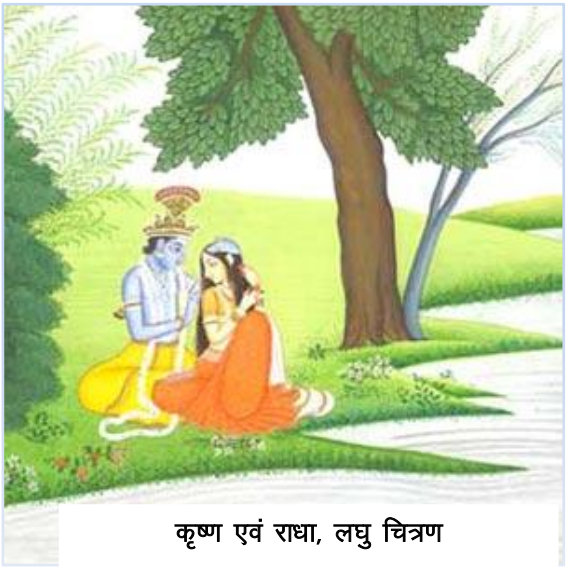

कृष्ण एवं राधा, लघु चित्रण

जहाँ कला है, वहाँ भावों की अभिव्यक्ति है, जहाँ भाव है, वहाँ रसों का होना स्वाभाविक है और चित्रकला में रसों की निष्पत्ति के लिये चित्रकला के प्रमुख तत्वों में समाहित रंगों का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि रंगों का चित्रकृति की स्वाभाविक प्रवृत्तियों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। रंग भावो को उभार कर चित्र में इस स्थिति को जन्म देते हैं।कला रसानुभूति एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जन्म से ही मनुष्य में विद्यमान रहती है। जैसे–जैसे वह अपने चेतन रूप में आता है और अपने आस–पास घटित हो रहे वातावरण के प्रति सजग होता है तभी से उसकी कला रसानुभूति प्रारम्भ हो जाती है। बादलों में इन्द्रधनुष का दिखना, पक्षियों का उठना, खिलौनों की गतियों को निहारना अन्य विलक्षण रूप रंग एवं आकारों को देखकर वह आकर्षित होता है। शैशवावस्था का यही आकर्षण समय के साथ–साथ परिपक्व होता जाता है। धीरे–धीरे रसानुभूति विकसित एवं सशक्त होती जाती है। हम सौन्दर्य की अनुभूति प्राप्त करते है। जो रूप जितना विलक्षण होता है, मानव पटल पर गहराई से अंकित हो

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जाता है। यह अनुभूतियाँ हमारी मनः स्थिति के साथ संयोजित होती है और व्यक्त होती हैं। यदि हमारी मनः स्थिति दुखद है, तो हम चित्र के साथ भी अपनी वेदना को जोड़कर द्रवीभूत होते है। व्यक्ति की संवेदनशीलता जिनती अधिक होगी उतनी ही गहन रसानुभूति होती है।

भारतीय चित्रकला के परिदृश्य में रंगों की भाषा प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक निनरन्तर रचनात्मक कौशल के साथ प्रस्तुत होती रही है। अजन्ता की महान कलाकृतियाँ नियमबद्ध रंग संयोजन की सृजनात्मकता को प्रस्तुत करती है जिनमें प्रत्येक भाव निहित है। लघु चित्रण परम्परा में रंगों का प्रतीक रूप में रचनात्मक प्रयोग सम्पर्ण विश्व को आज भी अपने आकर्षण में बाँधे है। वह रंगों की सुकोमल भाषा व सप्तरंग संसार ही है जिसने पहाड़ी कला में भावों की अनगिनत श्रृंखलाओं को प्रस्तुत किया। मुगल कला का सूफीयानापन व उसका राजसीवैभव भी आकर्षक एवं कलात्मक रंग संयोजनों की रचनात्मक क्षमता का परिचायक है। भारतीय चित्रकला की यह प्राचीन धरोहर अपने इन्हीं विशिष्ट गुणों से भावों की अतिरंजना को प्रस्तुत करती हैं।

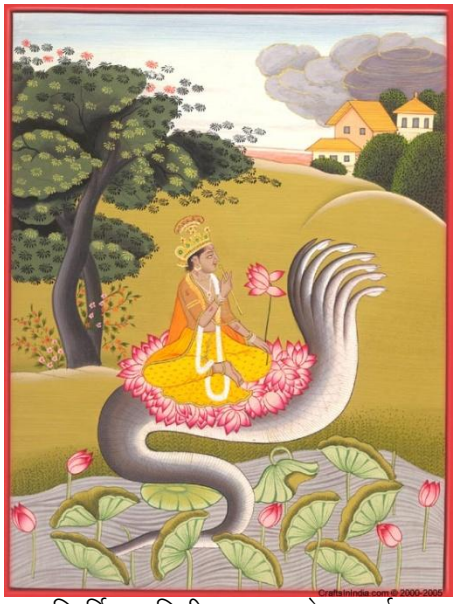

परिवर्तित गतिशील कला के अन्तर्गत कलाकारों ने अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति के लिए मनः कुल रंगों का प्रयोग किया और अपनी आकृतियों को रसभावपूरित किया। आधुनिक कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों में रंगों के कलात्मक प्रयोग में नवीन आयाम स्थापित किये। यामिनी राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अमृता शेरगिल, गगेन्द्रनाथ ठाकुर इन सभी कलाकारों की कृतियों में रंगों के आलोक की अद्‌भुत शक्ति एवं निर्भीकता के दर्शन होते है। यामिनी राय ने सीमित रंगों के प्रयोग से अपने चित्रों में वात्सल्य, सौन्दर्य एवं शान्त रसों की अद्‌भुत अभिव्यंजना प्रस्तुत की है। इसी प्रकार अमृता शेरगिल के लाल, नारंगी एवं कत्थई रंगों की रचनात्मक आभा प्रेम श्रृंगार एवं वियोग के स्वपनिल प्रभाव को प्रस्तुत करते है।

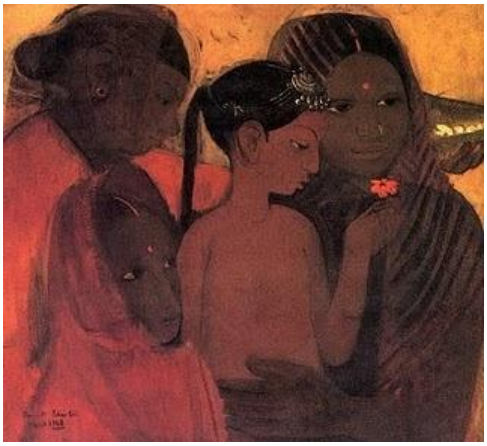

आदीवासी युवतियॉ ,अमृता शेरगिल

प्रभाववाद एवं घनवाद के आगमन के साथ रंगों के स्वाभाविक एवं निर्मल सौन्र्दय को अधिक प्रयुक्त किया गया। हेब्बार, चावड़ा, बेन्द्रे, गोपाल घोष, डी. जे. जोशी, एस. बी. पाल्सीकर यह वह सभी कलाकार है जिन्होंने अपने चित्रों में रंगों को नयी भाषा एवं पहचान दी। मानव जीवन के विविध भावों को रंगों के आकर्षक प्रयोग से उभारा। एम. एफ. हुसैन, तैयब मेहता, रजा, लक्ष्मण पै, पारितोष सेन, रामकुमार भारतीय कला नक्षत्र के यह सभी सितारे रंगों के सिद्धहस्त प्रयोग के प्रमाणिक उदाहरण है।

निष्कर्ष

भाव व रस चित्रकला में सदैव सम्बन्धित रहे हैं। अतः उनका महत्व प्राचीन काल से आज तक विद्यमान है। रंगों, रसोंव भावों की उपस्थिति एक कलाकृति को सप्राण बना देती है। रंगों से कलाकृति में आकर्षक स्वरूप व ऊर्जा परिलक्षित होती है, जो चित्र में संवेगात्मक भावों को उद्वेलित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वाचस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला, पेज–54*
2. *समरागंणसूत्रधार ।। अध्याय 55 श्लोक–4*
3. *वासुदेव केतकर गोदावरी, भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र*
4. *राजेन्द्र, वाजपेयी, सौन्दर्य, तृतीय संस्करण, पृ.सं.–52*
5. *वासुदेव केतकर गोदावरी, भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र*
6. *चित्रसूत्रम्*
7. *चित्रसूत्रम् 3. 38. 15*
8. *वासुदेव केतकर गोदावरी, भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र*